आईआईटी इंदौर की रिसर्च : देश की दो तिहाई उपजाऊ जमीन में नमी की कमी

नर्मदा बेसिन खतरे से बाहर, लेकिन प्रदेश के जंगल पर संकट के बादल

इंदौर। नईदुनिया प्रतिनिधि

देश की जमीन और नदियों के साथ जंगल सूख रहे हैं। मिट्टी में कम हो रही नमी से उपजाऊ जमीन के साथ देश की खाद्य सुरक्षा पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। क्लाइमेट चेंज यानी जलवायु परिवर्तन पर आईआईटी इंदौर के हालिया अध्ययन से ये नतीजे निकलकर सामने आए हैं। विश्व जल दिवस शुक्रवार को आईआईटी ने अपनी रिसर्च के बिंदु सार्वजनिक करते हुए निष्कर्ष दिया है कि हरियाली और जंगल सहेजने के लिए गंभीरता से प्रयास नहीं हुए तो देश का आधे से ज्यादा क्षेत्र शुष्क हो जाएगा। इस रिसर्च में राहत की बात यह है कि जो 16 रिवर बेसिन डेंजर जोन में माने गए हैं उसमें मप्र की जीवन रेखा नर्मदा नदी नहीं है। इसका कारण यह भी है कि नर्मदा के किनारों पर कोई बड़ा डेल्टा या उपजाऊ क्षेत्र एक साथ नहीं है जैसा अन्य राज्यों में है। लेकिन जंगल के मामले में प्रदेश खतरे की लकीर पर खड़ा है।

डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी के निर्देशन में आईआईटी इंदौर की अगुआई में देश के 24 प्रमुख रिवर बेसिन (नदी क्षेत्र) और 10 प्रमुख वनाच्छादित क्षेत्रों में यह अध्ययन किया गया है। आईआईटी गुवाहाटी भी इसमें शामिल रहा है। दो वर्ष से ज्यादा समय से चल रहे इस अध्ययन के पहले नतीजे आईआईटी इंदौर ने अब जारी किए हैं। 24 में से 16 रिवर बेसिन तेजी से सूख रहे हैं। उपजाऊ मानी जाने वाली इन नदी क्षेत्रों की मिट्टी भी सूखी हो रही है। देश के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र की मिट्टी में सबसे तेजी से नमी की कमी दर्ज हो रही है। साबरमती, माही और लूनी नदी का 80 प्रतिशत क्षेत्र शुष्क होने का खतरा झेल रहा है, जबकि गंगा नदी के क्षेत्र में आने वाला 25 प्रतिशत हिस्सा सूखे के हिसाब से संवेदनशील क्षेत्र में आ गया है। कावेरी, तापी और कृष्णा नदी के इलाके भी सूखे के खतरे से जूझ रहे हैं। इस सबके चलते देश की 50 फीसदी हरियाली पर खतरा मंडरा रहा है। इसी के चलते देश की दो तिहाई उपजाऊ जमीन पर होने वाली पैदावार भी आने वाले दिनों में प्रभावित होगी। इसका नतीजा देश में खाद्यान्न संकट के रूप में भी सामने आ सकता है।

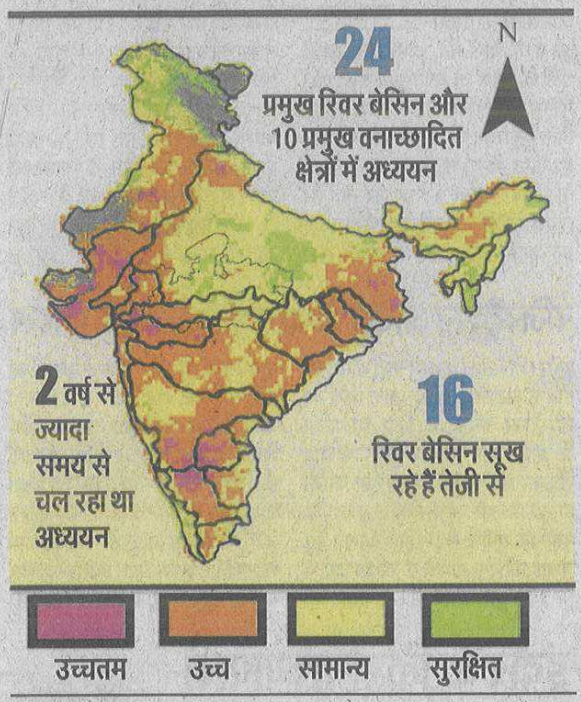

बढ़ते सूखे का जारी किया मानचित्र

आईआईटी इंदौर के डॉ. राहुल शर्मा के मुताबिक अध्ययन के नतीजे शोध पत्रों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रारंभिक रूप से सामने आए निष्कर्ष के साथ आईआईटी ने देश में हरियाली और बढ़ते सूखे के खतरे का एक मानचित्र भी जारी किया है। इसके मुताबिक देश के उत्तर, उत्तर-पूर्व, पूर्व और मध्य क्षेत्र के कुछ ही हिस्से की हरियाली फिलहाल सूखे के संकट से दूर है। जलवायु परिवर्तन का सबसे ज्यादा असर और सूखे का खतरा देश के पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्रों में दिख रहा है। इसके साथ ही ज्यादातर क्षेत्रों में स्थिति ऐसी है कि अब उपाय नहीं किए गए तो जल्द ही इन क्षेत्रों की वनस्पतियां खत्म होने लगेंगी। और रेगिस्तान जैसे हालात बन जाएंगे।

Nai Dunia (Indore), 23rd March 2019, Page-4